om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 3

आज ''मनुष्य की आवश्यकता है''...!

एक बड़ी कंपनी के गेट के पास सदा एक विज्ञापन के रूप में लिखी तख्ती लटकी रहती थी,''मनुष्य की आवश्यकता है''। कर्मचारियों की भर्ती हो रही है। नये-नये व्यक्ति नौकरी में जुड़ते जाते, फिर भी बारह महीने तक वह तख्ती लटकी रहती थी। ये देख एक जिज्ञासु ने उस कंपनी के मैनेजर से पूछा कि क्या आपको जितने चाहिए उतने मनुष्य नहीं मिलते? बारहों मास आप कंपनी के बाहर मनुष्य की आवश्यकता की तख्ती क्यों लगा के रखते हो?

मैनेजर ने कहा:''ऐसा नहीं है, खाली पड़ी जगह पर कर्मचारी आते-जाते रहते हैं लेकिन 'मनुष्य' की जगह सदा खाली रहती है। कर्मचारी बनना सहज है, लेकिन 'मनुष्य' बनना अत्यंत कठिन है, इसलिए हमारी कंपनी में वर्तमान की पॉलिसी के अनुरूप जो व्यवस्था है वो हमें नहीं चाहिए,सख्त बाह्याचार से पालन करने वाला धर्म भी नहीं चाहिए, कुबेर के भंडार भी नहीं चाहिए, महान सत्ता भी नहीं चाहिए, समर्थ कलम भी नहीं चाहिए, हमें तो केवल सच्चा मनुष्य चाहिए!

- ब्र.कु. गंगाधर

यहाँ हमें ऐनन नाम के चिंतक के शब्द अवश्य प्रेरणास्रोत बन सकेंगे। ऐनन कहते हैं कि हे ईश्वर! हमें मनुष्य दीजिए, वर्तमान समय में दृढ़ मन, विशाल अंत:करण, सच्ची श्रद्धा और काम करने की तत्परता अपनाने वालों की ज़रूरत है। जिस मनुष्य को सत्ता का लोभ नहीं, जिसे सत्ता प्राप्त होने वाला द्रव्य खरीद न सके, जो स्वतंत्र अभिप्राय और इच्छाशक्ति वाला हो, जो मनुष्य के हित में जीवन व्यतीत करने वाला हो, जो असत्य नहीं बोले, जो ऊंचे दर्जे वाले मनुष्यों के सामने खड़े रह सके और ज़रा भी बिना डरे, जो घृत ,खुशामद के प्रति तिरस्कार दर्शाने में सक्षम हो।

एक बार परम पूज्य युवाचार्य विनीत सेन 'गुरुजी' के यहां से पुस्तक प्राप्त हुई उसमें प्रथम चेप्टर का हेडिंग था कि '' मनुष्य की ज़रूरत है''! अगर विश्वपिता की भी ऐसी कोई किताब होती तो उसका चेप्टर भी यही होता: ''मनुष्य की ज़रूरत है''। विश्व के हरेक धर्म में भी एक ही बात पर ज़ोर दिया जा रहा है कि 'दीजिए भाई दीजिए; इस धरती को सच्चे मनुष्य दीजिए'! आज किन मनुष्यों का भार धरती उठा रही है! सूरज तप रहा है, जलधाराएँ बह रही हैं, हवा चारो ओर फैल रही है, सागर भी गर्भित रीति से एक ही नाद कर रहा है, धरा से गगन तक एक ही अभिलाषा है: सच्चा मनुष्य, सत्यशील मनुष्य इस जगत को प्राप्त हो! धरा वसुधा बन गई, लेकिन मनुष्य 'मनुष्य धा' यानी मनुष्यता धारण करने वाले बन जाएँ, उसकी मृत्युलोक और स्वर्गलोक दोनों को प्रतीक्षा है।

भाग्य के सृष्टाओं में भी इसी बात पर बल दिया जाता है। कहते हैं कि प्राचीन काल में एथेन्स शहर में डायोजिन्स नामक व्यक्ति दोपहर के ठीक बारह बजे हाथ में 'लालटेन' लेकर निकलता था और भारी भीड़ भरे बाज़ार में खड़ा होकर बुलंद आवाज़ से पुकारता: ''आओ भाई आओ, मेरी बात सुनो''! लोग इकट्ठा हो जाते, डायोजिन्स तुरंत ही मुँह फेर लेता और कहता: ''अरे! मैने लोगों को नहीं 'मनुष्यों' को बुलाया था, मुझे चेहरेवाला मनुष्य चाहिए, मोहरे वाले लोग नहीं''।

उस कंपनी की तरह ही परमपिता परमेश्वर ने भी इस जगत में एक गुह्य लिपि में लिखकर तख्ती लटकाकर रखी है: ''मनुष्य चाहिए''! सदियों या युगों के बाद मानव जगत को एक ऐसा मनुष्य मिलता है राम रूप में, श्याम रूप में, बुद्ध रूप में, महावीर रूप में, गुरुनानक रूप में, मोहम्मद रूप में, जीसस क्राईस्ट के रूप में, कनफ्यूशियस रूप में या अन्य कोई संत के रूप में! लेकिन उनके जाने के बाद फिर जगह खाली! कोई बनाये तो कुछ बन सकें, ऐसी सोच से मानव जाति अभी तक उभर नहीं पाई है। पृथ्वी पर रहने वालों को सब बनाना आता है लेकिन 'मनुष्य' बनाना नहीं आता! 'भाग्य के सृष्टाओं' में ऐसे मनुष्य का विस्तृत वर्णन किया गया है। आज देश-दुनिया को, प्रत्येक जगह एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता है जो कि मनुष्य की भीड़ में खुद का व्यक्तित्व गुम न कर बैठे, जिसमें खुद के निश्चय पर अडिग रहने की हिम्मत हो और सारी दुनिया 'हाँ' कहे तो भी 'ना' कहने में जिसे ज़रा भी भय न होता हो।

एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता है जो एक महान उद्देश्य को खास उमंग-उत्साह पूर्वक करता हो और फिर भी खुद के उमंग उत्साह और जिज्ञासा के साथ कोई समझौता न करता हो, जो सर्व शक्तियों से सदा सुसज्जित हो।

एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता है, जिसका 'मिजाज' स्थिर हो, जो स्वयं के प्रति कम से कम उपभोग करने वाला हो व संकुचित विचारों का त्याग कर देने वाला हो, जिसका विकास एकांकी रूप - शेष पेज 3 पर...

हमारा त्याग हमें मंज़िल तक ले जाता

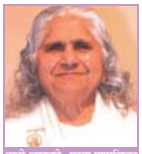
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

यह समय बहुत वैल्युबल है। समय की कीमत हम अपने पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। यह समय बाप से मिलन मनाने का है। बहुत समय से बिछुड़े हैं, सतयुग त्रेता में यह फीलिंग नहीं थी, सुख में सब भूल गया। प्रालब्ध भोग रहे थे, यहाँ का पुरुषार्थ था। अभी संगम के समय का महत्व जानते हैं इसलिए बीती सो बीती। बाबा ने हम सबको डायमण्ड चाबी दे दी-मीठा बाबा, प्यारा बाबा, मेरा बाबा... यह डायमण्ड शब्द बाबा ने सिखाया है। दिल कहता है बाबा तेरा शुक्रिया। अपने आपको देखो बाबा ने क्या बनाया है! बाबा की हमारे प्रति क्या आशायें हैं, उम्मीदें हैं, ज़रूर पूरी करेंगे। भक्ति में भी कहते हरि इच्छा, अपनी कोई इच्छा नहीं है। भगवान ने मेरे ऊपर यह बहुत मेहरबानी की है जो कोई इच्छा नहीं है। इच्छा यही है प्रभु लीला में अच्छे से अच्छा पार्ट बजाऊं। मुझ आत्मा को जीना, शरीर में रहना, देह संबंध से न्यारा रहना बाबा आपने सिखाया है। जितना न्यारा, उतना प्यारा। कोई प्यारा नहीं है तो समथिंग मिसिंग है अथवा मिक्सिंग है। अगर बाबा से प्यार नहीं खींचते हैं तो सूखे-सूखे हो जाते हैं। झाड़ की वृद्धि तो हुई लेकिन फल भी ऐसा हो जो उसको खाने वाला, ज्यूस पीने वाला खुश हो जाये। फल ही इच्छा नहीं है, अल्पकाल के सुख की, मान-शान की इच्छा नहीं है। सच्चाई, प्रेम से याद और सेवा से, सच्चाई का फल खा रहे हैं। अपने मन बुद्धि से चलना दूसरों को राय देना, इससे पाप विनाश नहीं होते हैं और ही बन जाते हैं। तो बाबा ने जो दिया है वही मेरे साथ हो। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं। मीरा को तो थोड़ा साक्षात्कार हुआ। हम तो भगवान के साथ बोलते, खाते, उनके संग रहते, वन्डरफुल भाग्य है। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं संग रहूं, तुम्हीं से बोलूं...।

सन्यासी जब सन्यास करते हैं तो पहले वाला नाम भूल जाता है। हर नाम के पीछे आनंद आ जाता है। जैसे गंगेश्वानंद... ऐसे ब्रह्माकुमार माना बाबा के जो गुण हैं उसके मास्टर हैं। बाबा ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, आनंद का सागर, सर्वशक्तिवान है तो बच्चे ज्ञान स्वरूप, प्रेम, आनंद स्वरूप, शक्ति स्वरूप मास्टर दाता हैं। तो हर एक अपने स्वरूप को देखें।

जैसे बाबा ने सुनाते-सुनाते फिर 5 मिनट ड्रिल कराई। तो सभी का अटेन्शन रहा, सभी ने ड्रिल किया। एकदम शान्त। बाबा ने कहा बर्थ डे की सौगात दे दो कोई व्यर्थ संकल्प विकल्प नहीं चलेगा। व्यर्थ संकल्प को चलने की ताकत नहीं है। वह आ नहीं सकता। बाबा जो सुनाता है, पर्सनल हमको सुना रहा है। इतना अच्छा यज्ञ चल रहा है। आँखें खोलकर देखो, सारे विश्व में सेवा चल रही है। हमारा अगर व्यर्थ संकल्प है तो हम अपनी सेवा नहीं कर रहे हैं। भले यज्ञ सेवा कर रहे हैं अगर मेरे कारण किसी के व्यर्थ संकल्प चल रहे हैं तो भी सेवा नहीं है। इतना खबरदार, होशियार। बाबा की याद तभी आयेगी, औरों को मेरे से शान्ति का अनुभव तभी होगा जब मेरे कारण किसी के संकल्प न चलें।

दादा विश्वरतन सदा कहा करते मेरा तो व्यर्थ नहीं चलता लेकिन मेरे कारण किसका व्यर्थ संकल्प नहीं चले। एक-एक पूर्वज में कोई न कोई विशेषता व गुण थे, वह वन्डरफुल। बाबा जैसे चलाये, जो बाबा खिलाये, बाबा से इतना प्यार हर एक का रहा है।

बाबा ने कहा पवित्रता में ही सत्यता है। पवित्रता में अंश मात्र भी अपवित्रता है तो सच्चा होकर चल नहीं सकता। भगवान के घर में झूठ नहीं चल सकता। थोड़ा भी झूठ, थोड़ी भी हेराफेरी, अंदर एक है बाहर दूसरा है। तो खबरदार, होशियार, सावधान। पुराने ज़माने में आवाज में चौकीदार बोलते थे, खबरदार रहो, होशियार रहो... चौकीदार क्यों रखते हैं? कोई चोर घुस न आवे। हमारे ऊपर बाबा सारा दिन चौकी करता है। गुडमॉर्निंग भी करता है तो गुडनाइट भी करता है।

जो थोड़ा भी दान करता है तो दान से पुण्य बन जाता है, वह महादानी बन जाता है। जो महादानी है उनको बाबा वरदान देता है। वरदान है बच्ची, हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है। यह बाबा के मीठे महावाक्य कानों से सुने हैं, बाबा के वरदानों से सारी लाइफ चली है। बाबा के वरदान हमारी लाइफ को साथ देते हैं।

वायुमण्डल बदलना हमारी ज़िम्मेवारी

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न: हमने आधा घण्टा योग किया, तो ऐसे लगा जैसे कुछ मिनट ही बैठे, समय कैसे बीत गया पता भी नहीं चला। ऐसा क्यों?

उत्तर: लगन लग गई तो पता क्या पड़े! बाबा तो कहता है वायुमण्डल को ठीक करो। सतयुग में वायुमण्डल ठीक होगा, तो वायुमण्डल को कौन ठीक करेगा? आत्माओं को तो करना ही है लेकिन वायुमण्डल को भी ठीक करना है। सतयुगी राजधानी में तो वायुमण्डल कितना अच्छा है। तो अभी वायुमण्डल में वायब्रेशन भेजो। आखिर अन्त में तो सभी समझ जायेंगे ना कि यह गुप्त में कार्य चल रहा था लेकिन हमने पहचाना नहीं।

प्रश्न: दादी जी, जैसे यहाँ बैठते हैं तो संकल्प पावरफुल होता है, वायुमण्डल को भेजते हैं लेकिन जब कारोबार में जाते हैं तो फर्क हो जाता है, यह फर्क मिट जाये, उसके लिए क्या करें?

उत्तर: मतलब जो कारोबार का वायुमण्डल है उसका असर आ जाता है। हाँ, यह फर्क मिटेगा क्योंकि आदत पड़ जायेगी ना, जैसे वो आदत पड़ी है, वैसे यह भी आदत पड़ जायेगी, अटेन्शन देंगे तो हो जायेगा। हमें ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है ना! ब्रह्माबाबा को कितनी ज़िम्मेवारियाँ थीं, एक-एक आत्मा के भाव स्वभाव सबकी ज़िम्मेवारी थी फिर भी बाबा ने अपनी हिम्मत से वायुमण्डल चेंज किया ना, जो आये थे शुरु में और धीरे-धीरे वो बदले तो सही ना। नम्बरवार भले होंगे लेकिन बदले तो सही ना। बाबा को एकदम पूरा साथ देने वाले भी तो थे ना।

प्रश्न: दादी, वायुमण्डल में प्रकृति के पाँचों तत्व भी आयेंगे ना! बाबा कहता है इनकी भी सेवा करो, अभी यह परेशान कर रहे हैं फिर आपको यह मदद करेंगे, दासी बनेंगे। तो दादी इस समय उनकी सेवा के लिए क्या और किया जाये? अभी कहीं पर अग्नि का तत्व बहुत फोर्स कर रहा है, कहीं जल का उपद्रव, कहीं बर्फ पड़ रही है। पूरे विश्व के अंदर पाँचों तत्व बड़ा नुकसान कर रहे हैं। बाबा कहता है तुम बच्चे इनकी सेवा करो। इसके लिए कौन सा अच्छा-सा स्वमान ले करके योग किया जाये तो वायुमण्डल बने, कैसे योग करें?

उत्तर: यह तत्व भी सतोगुणी होंगे ना! सतयुग में दु:ख थोड़ेही देंगे, तो उनकी सेवा अभी करनी है। लेकिन इसके लिए जब अपनी सतोगुणी अवस्था जितनी ज़बरदस्त होती जायेगी, उतना सतोगुण उन्हों में ऑटोमेटिक पहुँचता रहेगा क्योंकि संकल्प तो हमको है ना, वायुमण्डल को ठीक करना है। जैसे तमोगुण के वायब्रेशन तीव्रगति से फैल रहे हैं, ऐसे हम अपने सतोगुण के वायब्रेशन चारो ओर फैलायें तो वो दब जायेंगे। वायुमण्डल बदलना तो है ना! इसके लिए इसी स्वमान में रहें कि ''मैं मास्टर रचयिता हूँ''। मालिक का बच्चा मालिक ही होता है। तो वो मास्टर रचता का स्वरूप हमारा होगा, तो रचता के वायब्रेशन ऑटोमेटिकली रचना के तरफ ही जायेंगे, तो यह हो सकता है। आखिर तो हमको ही वायुमण्डल को बदलना है। अपना राज्य स्थापन करना है, आत्मायें और वायुमण्डल दोनों को पवित्र बनाना है और यही हमारे योग का फल है। जितना-जितना हम पावरफुल बनेंगे, उतना-उतना हमारे साथ तत्व भी बदलेंगे। तो हमारा वायुमण्डल जितना पावरफुल होगा, उतना पाँचों तत्वों को, सारे संसार को पहुँचेगा। जैसे पानी का फोर्स होता है, तो दूर तक जाता है ना। ऐसे ही हमारा वायुमण्डल अगर पावरफुल होगा, तो वह नैचुरल दूर-दूर तक जायेगा। अभी तो कभी अपने में भी लग जाता है। हम सिर्फ बाबा से लेके अपनी पावरफुल स्टेज पर ठहरे रहें, इससे ही फैलेगा। बाकी कोई एक-एक को थोड़ेही देते रहेंगे।